केवल निजी वितरण के लिए

ECHOES
INDIA

श्री राम चंद्र मिशन

मार्च २०१४ खंड ७, अंक २

पूज्य लालाजी महाराज का १४१ वाँ जन्म दिवस समारोह १ से ४ फरवरी २०१४

मणपाक्कम

गुरुदेव ने २ फरवरी की सुबह ७:३० बजे सत्संग कराया। जैसे ही उन्होंने अपनी पहियेदार कुर्सी में बैठकर कक्ष में प्रवेश किया, लगभग ४००० अभ्यासियों ने एक साथ ताली बजाना शुरु कर दिया। सत्संग के बाद गुरुदेव ने एक वार्ता दी जिसका मुख्य विषय था, 'यहाँ और अब'। उन्होंने कहा कि अभ्यासियों को समय बरबाद नहीं करना चाहिए क्योंकि समय कम है और उन्हें अपने दैनिक अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सहज मार्ग के माध्यम से किसी भी मनुष्य के लिए एक ही जीवन काल में मुक्ति पाना संभव है जबकि पहले इसके लिए हजारों–हजारों साल लग जाते थे।

शाम को सत्संग के बाद चेन्नई के युवाओं द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। ४ फरवरी को बसन्त पंचमी के दिन गुरुदेव ने सुबह ७:३० बजे सत्संग कराया जिसके बाद बहन माधुरी कृष्णा ने 'व्हिस्पर्स' से एक सन्देश पढ़कर सुनाया। इसके पश्चात् भाई कृष्णा द्वारा एक वार्ता दी गई जिसमें उन्होंने गुरुदेव के जीवन की कुछ मुख्य घटनाओं के बारे में बताया। गुरुदेव ने १९६४ में बसन्त के दौरान मिशन में प्रवेश करने के बाद मिशन में एक अभ्यासी के रुप में ५० वर्ष पूरे किए हैं। वार्ता के बाद गुरुदेव ने एक केक काटा। जब वे कक्ष से बाहर जा रहे थे, एक रूसी जोड़े ने उनसे अपना विवाह करवाने के लिए आग्रह किया और वे सहमत हो गए।

इसके बाद गुरुदेव अस्थाई उपाहार गृह का उद्घाटन करने चले गए। इस बीच कक्ष में भाई गुरप्रीत चरन ने कुछ भजन गाए। उत्सव का समापन करने के लिए शाम ६:३० बजे भाई गणेश और कुमारन ने गायन प्रस्तुत किया और बहन जयन्ती ने वीणा पर उनका साथ दिया।

तिरुपुर – १ से ४ फरवरी २०१४

काफी लम्बे समय के पश्चात् पूज्य लालाजी महाराज का जन्मोत्सव विश्वस्तरीय भंडारे के रूप में मनाया जा रहा था। चार दिवसीय भंडारा १ फरवरी से लेकर ४ फरवरी, जो कि चन्द्र बसन्त पंचमी का दिन था, तक आयोजित किया गया। अभ्यासियों ने उत्सव की तैयारी से लेकर आयोजन तथा समाप्ति तक पूरे उत्साह से भाग लिया। आयोजन, जैसा कि हम तिरुप्पुर में आशा करते हैं, उच्चस्तरीय था। २ फरवरी तक १६५०० अभ्यासी आ चुके थे जिनमें से १५०० स्वयंसेवक तथा १७२९ बच्चे थे।

प्रतिदिन तीन सत्संग कराए गए– सुबह ०६:३० बजे, ११:०० बजे तथा शाम को ०५:०० बजे। भाई कमलेश ने सत्संग के पश्चात् पाँच वार्ताएँ दी तथा एक वार्ता प्रशिक्षकों के लिए दी । इन वार्ताओं से अभ्यासियों को सहज मार्ग को और अधिक गहराई से समझने तथा महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने में सहायता मिली।

गुरुदेव की आध्यात्मिक उपस्थिति उत्सव के हर पहलू में प्रतीत हुई । यद्धपि वे शारीरिक रूप से वहाँ उपस्थित नहीं थे फिर भी २ फरवरी को सुबह के सत्संग के बाद वे चेन्नई से वेबलिंक के द्वारा समूह को सम्बोधित करते हुए अभ्यासियों से जुड़ गये । भाई कमलेश ने उत्सव समिति का अध्यक्ष होने के नाते सभी अभ्यासियों को वातावरण की सूक्ष्मता के साथ अपने व्यवहार को जोड़ने के लिए प्रेरित किया। ऐसा करने से स्वाभाविक रूप से अभ्यासियों में अनुशासन आता दिखाई दिया।

२ फरवरी को सुबह ६:४५ बजे के सत्संग के बाद भाई कमलेश ने चार शादियाँ करवाईं तथा १ फरवरी को प्राप्त हुआ 'व्हिस्पर्स सन्देश' पढ़ा । कुछ नई किताबें तथा कुछ नए फोटो जारी किए गए। इसके बाद भाई गुरप्रीत तथा भाई पीयुष ने भजन प्रस्तुत किए।

अपनी पहली वार्ता में भाई कमलेश ने लालाजी के 'बातचीत के सिद्धान्तों' को पढ़ा जिनमें लालाजी हमसे इस बात पर ध्यान देने का अनुरोध करते हैं कि हमारे बातचीत करने के तरीके से हमारे मन की सन्तुलित अवस्था तथा हृदय और चरित्र की शुद्धता का आभास होता है।

अपनी बाद की वार्ताओं में भाई कमलेश ने नीयत तरीके से नियमित साधना करने के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने हमारे प्रतिदिन के जीवन के कई उन कारणों के बारे में बताया जिनसे संस्कार बनते हैं, जैसे कि– हमारा बातचीत करने का तरीका, किस प्रकार का भोजन हम खाते हैं, आदि । उन्होंने यह भी कहा कि ध्यान करने के बाद हमें अपने हृदय की स्थिति पर चिंतन करना चाहिए तथा उस स्थिति को बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए । ४ फरवरी को अपने समापन सम्बोधन में उन्होंने सभी अभ्यासियों को यह कहकर बधाई दी कि इस वर्ष लालाजी महाराज द्वारा प्रारम्भ किये गये आयोजित सत्संगों को १०० वर्ष पूरे हो गए हैं। उन्होंने २ फरवरी को स्थायी ध्यान कक्ष में सभी प्रशिक्षकों, केन्द्र-प्रभारियों तथा ज़ोन-प्रभारियों को सम्बोधित किया। ३ फरवरी को उन्होंने सभी स्वयंसेवकों को एक विशेष सत्संग कराया।

उत्सव-स्थल पर कई स्थानों पर विभिन्न विषयों पर आधारित अनेक चित्र लगाए गए थे। ध्यान-कक्ष के बाहर लालाजी महाराज के जीवन पर आधारित एक प्रस्तुतिकरण लगाया गया था। कैन्टीन और बाल-केन्द्र के सामने चरित्र-निर्माण तथा दस नियमों पर आधारित एक आकर्षक दृश्य प्रदर्शित किया गया था । गुरुदेव के कॉटेज के पास के स्थान को 'शान्त-क्षेत्र' घोषित किया गया था। यहाँ चित्र लगाए गए थे जिनमें बताया गया था कि किस प्रकार इस स्थान का उपयोग शान्त भाव से हृदयपर ध्यान तथा अनुचिन्तन करने के लिये किया जाना चाहिए ।

बाल-केन्द्र में बच्चों को आयु के अनुसार तीन समूहों में बाँटा गया था– नन्हे-मुन्ने (०-६ वर्ष), छोटे-सितारे (७-१२ वर्ष) तथा युवा-व्यस्क (१३-१७ वर्ष) । प्रत्येक समूह के लिए अलग स्वयंसेवक थे जिन्होंने उन्हें विभिन्न प्रकार की गतिविधियों द्वारा नैतिक मूल्यों और सहज मार्ग के विषय में जानकारी दी । बच्चों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जिससे उनकी प्रतिभा का प्रदर्शन हुआ ।

मणपाक्कम से समाचार

२ से १४ दिसंबर २०१३

प्रशिक्षक शिक्षण सेमिनार

जैसा कि पिछले एकोज़ में बताया गया था कि करीब बीस प्रशिक्षक उम्मीदवारों को मणपाक्कम आश्रम में शिक्षण और प्रशिक्षक बनाने के लिए आमंत्रित किया गया था। हर सबेरे प्रशिक्षकों को कॉटेज में बुलाया जाता था और गुरुदेव उनको सिटिंग देते थे। एक या दो बार उन्होंने उस समूह से बात की और एक बार वे प्रत्येक से अकेले में मिले और बात की। हालांकि आखिरी सिटिंग को चार दिनों में बाँटकर देने की योजना थी, गुरुदेव ने ६ दिसम्बर, शुक्रवार को ही प्रत्येक उम्मीदवार आखिरी सिटिंग दे दी। सिटिंग और हर एक को प्रशिक्षक प्रमाण–पत्र देने के बाद गुरुदेव के मुख पर संतुष्टि और आराम की झलक दिखाई दी।

रविवार, १५ दिसंबर २०१३ – भाई कमलेश ने रविवार का सत्संग कराया और इसके बाद एक छोटी वार्ता दी। उन्होंने गुरुदेव के, अभ्यासियों के प्रति प्रेम के बारे में बताया जिसमें कोई अपेक्षा नहीं होती परंतु हमारे प्यार में अपेक्षाएँ होती हैं।

नींद विशेषज्ञ

गुरुदेव ने अमरीका के एक चिकित्सक, जो नींद के विशेषज्ञ हैं, के साथ लगभग आधा घंटा बिताया। गुरुदेव उनके कार्य के बारे में जानने के लिये उत्सुक थे। चिकित्सक ने समझाया कि कैसे शरीर में विभिन्न कमियों के कारण नींद में अवरोध होते हैं। उन्होंने फिर कहा कि गुरुदेव को रोज़ नारियल पानी पीना चाहिए। गुरुदेव मुस्कराए और कहा–"मुझे नारियल पानी पसंद है और मुझे वे चिकित्सक पसंद हैं जो ऐसी सलाह देते हैं जो मुझे पसंद है"। कमरे में उपस्थित सभी लोग जोर से हँसे।

श्रीलंका – मध्य–दिसंबर में श्रीलंका के लगभग साठ अभ्यासी जो मणपाक्कम में सेमिनार के लिए आए थे, गुरुदेव से मिलने आए। जब उन्होंने गुरुदेव से कहा कि केंद्रों में प्रगति होने के कारण और ज़्यादा प्रशिक्षकों की आवश्यकता है तो गुरुदेव बहुत प्रसन्न हुए।

धूप में सत्र– सूरज की रोशनी लेने के लिए गुरुदेव नियमित रूप से या तो कुटीर के सामने या कभी पीछे बैठते हैं। कभी–कभी वार्तालाप होतें हैं और कभी–कभी मौन सत्र होते हैं। इसके बारे में गुरुदेव ने कहा, "मुझे अपने आसपास लोगों कि आवश्यकता है। यह केवल धूप नहीं है। यह हृदय है। यह धूप, इंसानी हृदयऔर स्वेच्छा का मिश्रण है"।

गुरुदेव का २२ दिसंबर को त्वचा प्रतिरोपण काऑपरेशन हुआ और इसको ठीक होने में कुछ दिन लगे।

क्रिसमस

बुधवार २५ दिसंबर २०१३: गुरुदेव सुबह बहुत जल्दी उठ गये और ७ बजे के पहले ही तैयार हो गए थे। वे तरोताज़ा दिख रहे थे उन्होंने अपने आसपास सभी को क्रिसमस की शुभकामनाएँ दी। शुरुआत में उनका ध्यान कक्ष में सत्संग करवाने का विचार था लेकिन उनके चिकित्सक की सलाह पर वे कॉटेज में ही रुके। नाश्ते के बाद गुरुदेव ने करीब १०० अभ्यासियों को जोकि हॉल में एकत्रित हो गए थे, सत्संग कराया। उन्होंने सभी को शुभकामनाएँ दी और फ़िर सुनने, अर्थ पर ध्यान करने और जो सीखा है उसे आत्मसातकरने के विषय पर बोले। उन्होंने कहा, वर्ना हम केवल पढ़े लिखे बनते हैं और हम कभी सीखते नहीं हैं।

जनवरी २०१४

गुरुदेव ८ जनवरी को भाई कमलेश के नए घर में गए। भाई कमलेश गुरुदेव की व्हीलचेयर को धकेलते हुए ले गए। रास्ते में अभ्यासी कतारबद्ध खड़े थे। गुरुदेव ने फ़ीता काटा, अंदर गए और प्रसाद अर्पित किया। भाई कमलेश ने गुरुदेव को घर के अन्दर घुमाया। गुरुदेव ने सत्संग कराया लेकिन लगभग ३५ मिनट के बाद सत्संग में एक मोबाईल फोन बजा जिसने सबको विचलित कर दिया और गुरुदेव ने उसके तुरंत बाद सत्संग समाप्त कर दिया। गुरुदेव व्यथित थे और उन्होंने एक कड़ी वार्ता दी। बाद में, शयन कक्ष में गुरुदेव ने कहा, "सिटिंग असाधारण थी पर मैं सेल फोन से परेशान हो गया और सिटिंग रोकनी पड़ी। "

continued...

गुरुदेव की वहाँ रूकने की योजना नहीं थी लेकिन उन्होंने अपना विचार बदल दिया और कुछ दिन वहाँ रूकने का निश्चय किया । उन्होंने मकान में सूक्ष्म और आध्यात्मिक वातावरण बनाए रखने पर बल दिया जिससे वह वातावरण गुरु को वहाँ रख सके । वहाँ रहते हुए गुरुदेव ईरान, पिथोरागढ़ आदि से आए अभ्यासियों से मिले । एक शाम वे १०० से ज़्यादा अभ्यासियों से भरे हाल में बैठे और उनके साथ एक उत्तम वार्तालाप किया ।

१४ जनवरी २०१४: पोंगल

गुरुदेव जल्दी ही तैयार हो गए और उन्होंने कमरे में मौज़ूद कुछ लोगों को शुभकामनाएँ दी । गुरुदेव ने ध्यान कक्ष में जाते हुए कतारबद्ध खड़े अभ्यासियों को धैर्यपूर्वक शुभकामनाएँ दी । सत्संग के बाद वहां एक भजन गायन हुआ । यद्धपि वे इस सत्संग के बाद काफ़ी थके हुए थे लेकिन फिर भी वे बाहर आए और धूप में बैठे। पिथौरागढ़ के करीब १५० अभ्यासियों को अंदर आने दिया गया और ओमेगा स्कूल के करीब पच्चीस बच्चे गुरुदेव से मिलने आए जब गुरुदेव वहीं बैठे थे तभी उन्होंने भाई पी.आर. कृष्णा और भाई कमलेश के साथ तिरुवेल्लूर आश्रम में प्रस्तावित कॉटेज नक्शे को देखते हुए विचारविमर्श किया।

बुधवार, १५ जनवरी: तिरुवेल्लूर कॉटेज का भूमि पूजन

सुबह के सत्संग के पश्चात् गुरुदेव अस्वस्थ महसूस कर रहे थे और चिकित्सक के मना करने पर उन्होंने अपनी इच्छा के विरुद्ध भूमिपूजन के लिए अपनी तिरुवेल्लूर की यात्रा को स्थगित कर दिया ।

उन्होनें अपने स्थान पर भाई कमलेश को तिरुवेल्लूर जाने के लिये कहा । वापस लौटकर उन्होंने सूचना दी कि इस कार्यक्रम में करीब १५०० लोग आये थे और सब कुछ अच्छी तरह सम्पन्न हो गया ।

मालिक का स्वास्थ्य

महीने के मध्य में मालिक को सर्दी व खाँसी का सन्क्रमण हो गया था। उन्होंने कहा, "अच्छा होगा अगर मैं इस बीमारी की अवस्था में लोगों से न मिलूं क्योंकि मुझे चिन्ता है कि कहीं वे संक्रमित न हो जाएं।" उन्होनें संगीत सुना व उन्हें किताबें पढकर सुनाई गयी ।

१८ से २४ जनवरी, अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम

मालिक के लिये प्रशिक्षकों को तैयार करने का यह मैराथन सत्र था, जो कि उनके अस्वस्थ होने के बावजूद भी चल रहा था। रविवार को मालिक आई.एस.टी.पी. के प्रतिभागियों से मिले और उन्हें सिटिंग दी । लगभग तीस अभ्यासियों को प्रशिक्षक बनाया जाना था जिसकी तैयारी के कार्य के लिये मालिक ने कुछ प्रशिक्षकों को नियुक्त किया । यद्दपि सप्ताह के आरम्भ में मालिक अस्वस्थ थे फिर भी उन्होंने यह कार्य शुक्रवार तक ही पूरा कर दिया । अन्तिम सिटिंग के पश्चात् वे सभी नव –नियुक्त प्रशिक्षकों से एक–एक करके मिले व उन्हें प्रसाद और उनके प्रशिक्षक प्रमाण पत्र दिये। उन्होंने कहा कि "मैंने पूरी सिटिंग के दौरान अपनी खाँसी को रोके रखा जिससे कि कार्य में व्यवधान न आए"।

रविवार, २६ जनवरी २०१४

मालिक ने भाई संस्कृत कन्नन द्वारा गीता पर दी गयी चर्चा सुनी और वे अच्छे मूड में थे । शाम को सत्संग के दौरान वे आश्रम में घूमे । शाम को पौने ६ बजे उन्होंने कॉटेज के बाहर अफ़्रीका से आए अभ्यासियों से भेंट की और कुछ देर तक कॉटेज के सामने उनसे बातें करते रहे।

३१ जनवरी २०१४– चीनी नववर्ष

मालिक प्रात: जल्दी उठ गये थे, उनका स्वास्थ्य अच्छा था और जब वे बाहर आकर बैठे तो काफ़ी ऊर्जावान और प्रसन्न दिख रहे थे। चीनी अभ्यासियों ने मालिक को कुछ भेंट किया और मालिक ने चीनी भाषा में "हैप्पी न्यू ईयर" कहकर उनका अभिवादन किया।

अभ्यासी तीन बसों में तिरुप्पुर जाने के लिये तैयार थे । मालिक ने परिवहन व्यवस्था के प्रभारी को निर्देश दिए कि किस तरह बसों को एक–दूसरे से ओझल हुए बिना साथ–साथ चलना चाहिए ।

सुबह के नाश्ते के बाद मालिक कैनेडा से आए हुये अभ्यासियों से आँगन में मिले ।अभ्यासियों ने केक काट कर कैनेडा में आश्रम स्थापित होने की खुशी मनाई । मालिक ने सभी के साथ केक खाया और उनको बधाई दी।

ओसीनिया सेमिनार

७–१२ जनवरी २०१४ बी.एम.ए. मणपाक्कम

ऑस्ट्रेलिया, फ़िजी, न्यू केलेडोनिया और न्यूज़ीलैंड स्थित ओसीनिया केन्द्रों के अभ्यासी बी.एम.ए मणपाक्कम में ७ से १२ जनवरी के मध्य एकत्रित हुए। इस सेमिनार से पूर्व ४ से ६ जनवरी तक प्रशिक्षकों की एक कार्यशाला आयोजित की गयी। ४ जनवरी की प्रात: अपनी अस्वस्थता के बावजूद मालिक ने ४० प्रशिक्षकों हेतु सत्संग आयोजित किया, जिसके पश्चात् उन्होंने एक बहुत भावनात्मक वार्ता दी। बाद में गुरुदेव ने एक घण्टा उनके साथ गलियारे में बैठकर व्यतीत किया। कार्यशाला ऑडिटोरियम में आयोजित हुई जिसने प्रशिक्षकों को अमूल्य अन्तर्दृष्टि प्रदान की।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड दोनों के लिये वार्षिक साधारण सभा के साथ ७ जनवरी को २०० से भी अधिक सहभागियों हेतु ओसीनिया सेमिनार प्रारम्भ किया गया। भाई कमलेश ने सभा को सम्बोधित किया। मध्याह्न का समय स्वानुभूति, व्यक्तिगत सिटिंग अथवा पुस्तक भण्डार व पुस्तकालय भ्रमण हेतु रखा गया। युवाओं ने एक कार्यक्रम आयोजित किया जिसने सहभागियों के परस्पर जुड़ने में सहायता की। मालिक का प्रकाश महसूस किये जाने योग्य था, यद्यपि वे अपने स्वास्थ्य की वजह से पृष्ठभूमि में थे। सेमिनार में प्रवेश करते ही सभी ने गुरुदेव के प्रेम के फैलाव और समस्त गतिविधियों के पीछे उनके मार्गदर्शी हाथ को महसूस किया।

१० जनवरी की शाम को भाई कमलेश ने युवाओं को सम्बोधित किया। उनका सन्देश स्पष्ट था, "हम अपने समय का उपयोग किस प्रकार करें ताकि हमारे दैनिक जीवन की सामान्य गतिविधियों को आध्यात्मिक ध्यान मिल सके, जैसे हमारे खाने, सोने और वार्तालाप करते समय।"

११ जनवरी की सायंकाल यद्यपि गुरुदेव अस्वस्थ थे, वे कॉटेज के गलियारे में अभ्यासियों से मिले और नैतिक आचरण पर बोले तथा उसके बाद एक बहुत गहरी सिटिंग दी। न्यूज़ीलैंड की बहिनों ने माओरी में गीत गाया और तत्पश्चात् मालिक अपने अध्ययन में व्यस्त हो गये। रविवार की प्रात: मालिक द्वारा कराया गया सत्संग एक अद्भुत समापन था। भाई कमलेश के अन्तिम सम्बोधन में, घर लौटने के बाद हमारी अपनी स्थिति बनाए रखने के महत्व तथा समय का सदुपयोग करने बाबत प्रकाश डाला गया।

अफ्रिकी सेमिनार

मणपाक्कम–जनवरी २०१४

"विश्वास रखें!, मैं तुम सभी के साथ हूँ, भले ही तुम यहाँ मेरे साथ हो, अथवा नहीं!"

२० जनवरी तक, बोत्सवाना, केमरून, मिस्र, केन्या, मेडागास्कर, मॉरीशस, मोरक्को, रीयूनियन, दक्षिण अफ्रीका, तन्ज़ानिया और युगान्डा देशों से, अफ्रिकी सेमीनार के कुल १६३ प्रतिनिधियों में से अधिकांशत: पहुँच चुके थे। प्रतिदिन प्रात: ६:३०, ९:०० और सायं ५ बजे तीन सामूहिक सत्संग तथा मध्याह्न में व्यक्तिगत सिटिंग होती थीं। इसके अतिरिक्त वार्तायें, वीडियो (पूज्य मालिक की वार्तायें), अभ्यासी कार्यशाला, प्रशिक्षु कार्यशाला, प्रशिक्षक कार्यशाला तथा मालिक से मुलाकात भी आयोजित हुईं।

भाई राजेश राठौड़ एवं भाई कमलेश पटेल ने सहभागियों सेवार्ता की। इन वार्ताओं ने स्पष्टीकरण और आगे कीदिशा का मार्ग प्रशस्त किया।

अभ्यासियों ने आई.एस.ए.डब्लू. समूह को पिछले दिन दी गयी मालिक की वार्ता को सुना, जिसमें उन्होंने कहा कि प्रत्येक को मोमबत्ती जलाने वाली माचिस की तीली के समान होना चाहिए। हमें स्वयं को रूपान्तरित करना चाहिए, ताकि हमारी क्रियाविधि एवं आचरण द्वारा दूसरे भी रूपान्तरित हो सकें।

सहभागियों में परस्पर एकीकरण और मिलजुलकर कार्य करने हेतु छोटे समूह बनाए गए। व्यक्तिगत परिचय के पश्चात् प्रत्येक प्रतिनिधि को उनसे सम्बन्धित तीन साधारण प्रश्नों के उत्तर देने थे। मानवीय स्तर पर यह प्रयोग भावुक एवं मर्मस्पर्शी बन गया था। हास्य एवं अश्रु के मिश्रण से उनका आपस में एक दूसरे से परिचय हुआ तथा अफ्रीकन बहिनों एवं भाइयों के मध्य यह निकट बन्धन अब प्रत्यक्ष था।

पहले दिन मालिक से नए अभ्यासियों का परिचय कराया गया। दूसरे दिन मालिक ने उस समूह को सत्संग कराया। २६ जनवरी, रविवार के दिन शाम के सत्संग के पश्चात् उन्हें पूज्य मालिक से मिलने के लिए आमन्त्रित किया गया। मलिक ने सत्र के दौरान अफ्रीकन प्रतिनिधियों के भय एवं उनकी चिन्ताओं के विषय में उन्हें सम्बोधित किया।

भारत में लालाजी महाराज के जन्मोत्सव पर आयोजित विविध कार्यक्रम

जोधपुर

मुम्बई

भीलवाड़ा

कोलकता

उस्मानाबाद

लखनऊ

हुबली

चिकली

वरनगांव

गुलबर्गा

अखिल भारतीय निबंध लेखन कार्यक्रम २०१३

अखिल भारतीय निबंध लेखन कार्यक्रम २०१३, जिसका आयोजन श्री रामचन्द्र मिशन और संयुक्तराष्ट्र सूचना केन्द्र (यू.एन.आई.सी.) भारत और भूटान द्वारा प्रत्येक वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस की याद में किया जाता है, दो संस्थाओं के मध्य ९ वर्षों की भागीदारी है। श्रेणी–१ (कक्षा ९ से कक्षा १२ तक) का विषय – "मन तभी खुल सकते हैं जब दिल खुलते हैं।" – लालाजी मैमोरियल ओमेगा अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल के छात्रों को दी गई पूज्य मालिक की वार्ता से उद्धरित था। श्रेणी –२ (स्नातक और स्नातकोत्तर) के लिए विषय हेनरी डेविड थोरो के विचारोद्दीपक कथन – "आप जिस पर नज़र डालते हैं उसका उतना महत्व नहीं है जितना कि उसका जिसे आप वाकई देखते हैं।" – से लिया गया था। यद्यपि प्रतिभागी विषय पर विचार–विमर्श करने और शोध के लिए स्वतन्त्र थे, परन्तु उनको आत्मचिन्तन कर विषय पर अपनी समझ को प्रस्तुत करना था। इस वर्ष १२,१९३ शैक्षणिक संस्थाओं से १,७५,५८९ विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

शिवगन्गई

बीदर

बेल्लारी

कोलकता

औरंगाबाद

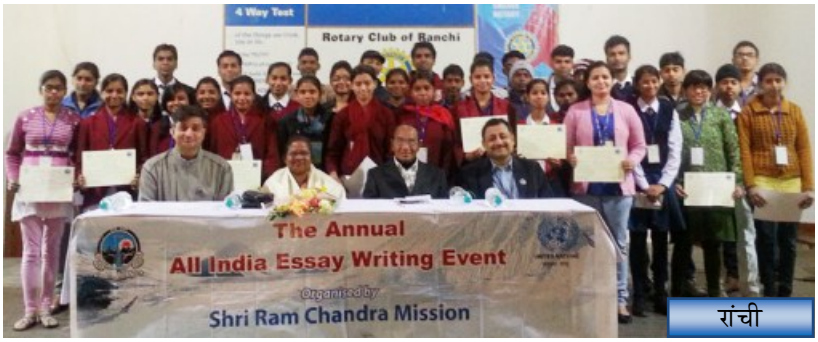

रांची

श्रेणी–१ का सर्वोच्च पुरस्कार डा. ए.एन.खोसला डीएवी पब्लिक स्कूल, राउरकेला (ज़ोन १४, उड़ीसा) की हरशिता चारी ने और श्रेणी–२ का सर्वोच्च पुरस्कार जयपुरिया प्रबंधन संस्थान, जयपुर (ज़ोन ७, राजस्थान) के अंकुर चक्रवर्ती ने जीता। उन दोनों को ट्रॉफी से पुरस्कृत किया गया तथा संयुक्तराष्ट्र सूचना केन्द्र के निर्देशक, एवं श्री रामचन्द्र मिशन के अध्यक्ष, द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र प्रदान किये गए। सर्वोच्च दो विजेताओं के निबंध श्री रामचन्द्र मिशन की वैबसाइट पर डाल दिये गये हैं।

इस वर्ष श्री रामचन्द्र मिशन के सभी अंचलों (२०१३ में कुल ३०) में निबंध लेखन कार्यक्रम आयोजित किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह विभिन्न केन्द्रों में आयोजित किए गए, जिसमें स्कूल तथा क्षेत्र स्तरीय पुरस्कार विजेताओं के साथ–साथ उनके अभिभावकों और अध्यापिकाओं की अभूतपूर्व उपस्थिति देखने को मिली।

इस कार्यक्रम की रिपोर्ट जिन केन्द्रों से प्राप्त हुई, उनके नाम हैं – दक्षिणी तमिलनाडु (परमाकुडी, कोविलपट्टी, तिरुप्पूर, गोपिचेट्टीपालयम, सिवगंगई), महाराष्ट्र (चिकली, अहमदनगर, मुम्बई, उस्मानाबाद, पुणे, पैठण, औरंगाबाद), उत्तर प्रदेश (बरेली, हरदोई, मेरठ, मुरादाबाद, लखनऊ, शाहजहाँपुर), उत्तरी कर्नाटक (गुलबर्गा, हुबली, बसवकल्याण, बेल्लारी, बेलगाम), केरल (अलुवा, पालक्काड), राँची, दिल्ली, पश्चिमी बंगाल (सिलीगुड़ी, खड़गपुर, रानीगंज, कोलकता), राजस्थान (बीवर, बाली), आंध्रप्रदेश (क़रनूल) एवं पंजाब (जलंधर)।

रानीगंज

कोविलपट्टी

मुरादाबाद

बहेड़ी

पैठण

पालक्काड

पुणे

जीरो

सिलिगुड़ी

बाल कार्यक्रम

पुलगाँव आश्रम, महाराष्ट्र

२५ दिसम्बर २०१३ को १४० बच्चों के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें उनका स्वागत सेन्टा क्लॉज के रूप में एक अभ्यासी ने किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ गुरुदेव के एक वीडियो से किया गया, जिसमें मालिक ओमेगा स्कूल के छात्रों के साथ दिखाई दिये। इसके बाद बच्चे खेल कूद एवं रचनात्मक गतिविधियों मे व्यस्त हो गये, जिसने उनको चरित्र निर्माण एवं नैतिक जीवन हेतु आवश्यक मूल्य आत्मसात करने में सहायता प्रदान की।

अभिभावकों के लिये स्वागत डेस्क का प्रबन्ध किया गया था। पूरे दिन का कार्यक्रम छतों पर बागवानी की प्रस्तुति के साथ सम्पन्न हुआ। सभी बच्चों के चेहरों पर आभा दमक रही थी और वे पुन: अगले कार्यक्रम में आने की उत्सुकता के साथ अपने–अपने घर लौट गए।

लुधियाना आश्रम, पंजाब

५ जनवरी को लगभग २२ बच्चों ने बागवानी के सत्र में भाग लिया। बच्चों को तीन समूहों में बाँटा गया। उन्हें व्यापार के लिये उगाये जाने वाले पौधों के बारे में बताया गया, जिनपर कीटनाशकों तथा कृत्रिम उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जोकि हमारे स्वास्थ्य के लिये अत्याधिक हानिकारक होते हैं। बच्चों ने मिट्टी को मिश्रित किया, गमलों मे भरा, बीजारोपण किया एवं अनेक पौधों को लगाया। सीखने पर आधारित एक गतिविधि ने बच्चों को अपनी शब्दावली को सशक्त करने में सहायता की। "व्हाई गो ग्रीन?" विषय पर लेखन सत्र में उन्हें पाँच ‘ आर’ – रिफ़्यूज, रिसाइकिल, रिचार्ज, रियूज, रिड्यूस – शब्दों के प्रयोग पर अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहित किया गया ।

जबलपुर आश्रम, मध्य प्रदेश

पैंसठ बच्चों ने २२ से २५ दिसम्बर २०१३ के बीच शीतकालीन शिविर में भाग लिया। यह कार्यक्रम आध्यत्मिक वातावरण में मूल्य–आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिये था। इसके लिये समर्पित स्वयंसेवकों की एक टीम ने पहल की और कई प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की गयीं, जैसे व्यायाम, क्रीड़ा, बागवानी, चित्रकारी, दस्तकारी, प्रश्नोत्तरी, शिक्षाप्रद कहानियाँ, स्वयंसेवकों द्वारा तैयार प्रेरक प्रस्तुतियाँ एवं प्रेरणात्मक चलचित्र आदि। स्वयं बच्चों द्वारा तैयार एक खूबसूरत सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त बच्चों के स्वास्थ्य की जाँच भी की गयी।

कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बी.एम.ए. कोलकाता ने २९ दिसम्बर २०१३ को आधे दिन के खेल कार्यक्रम के साथ अपना दसवाँ वार्षिकोत्सव मनाया। कार्यक्रम का प्रारम्भ उद्यान में बच्चों की नृत्य प्रस्तुति के साथ हुआ। इसके पश्चात प्रत्येक वय वर्ग के प्रतिभागियों के लिये अनेक खेल गतिविधियाँ हुईं। बाधा दौड़, तीन टांगों की दौड़ और बच्चों की संगीतमय कुर्सी दौड़, मुख्य आकर्षण थे। "दस नियमों" पर आधारित खेल ने लगभग सभी अभ्यासियों को सहभागिता के लिये आकर्षित किया। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण एवं दोपहर के भोजन के साथ हुआ।

युवा कार्यक्रम

युवा बैठक, अलुवा, केरल

१५ और १६ फ़रवरी को ज़ोनल आश्रम में वेलियापरम्बु, कोडुनगेल्लुर, ऐरनाकुलम, अमबेल्लुर, कालाडी, थ्रिसूर, पुलानी और अलुवा के युवा एकत्रित हुए । कार्यक्रम का उद्देश्य, ऐसी बैठकों से युवाओं को क्या अपेक्षायें हैं, यह जानना था । सामूहिक चर्चा और आपसी वार्तालाप के दौरान कुछ बिन्दुओं – जैसे, युवाओं को अपनी साधना में नियमित होने के लिये कैसे प्रेरित किया जाए और इस प्रकार वे इस योग्य बने कि दूसरे युवा व्यक्तियों को पद्धति के प्रति आकर्षित कर सकें, सहज मार्ग के विभिन्न तत्व आदि – पर चर्चा हुई । दोपहर में गुरुदेव की वार्ता, 'लिसनिंग फ्राम दि हार्ट' सुनने के पश्चात एक प्रश्नोंत्तर का सत्र हुआ । भाई मोहन (अंचल प्रभारी) ने अपनी वार्ता में बताया कि कैसे ध्यान और सहजमार्ग अभ्यास किसी भी व्यक्ति के लिए 'आत्म धर्म' के समान हैं । उन्होंने सुबह के सत्र मे पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के स्पष्टीकरण भी दिये ।

क्षेत्रीय युवा संगोष्ठी, गुवाहाटी, असम

११ और १२ जनवरी को गुवाहाटी आश्रम में 'रूपान्तरण' विषय पर दो दिन की आवासीय संगोष्ठी आयोजित की गयी । संगोष्ठी में असम, नागालैण्ड, मणिपुर और मेघालय से आये लगभग बावन अभ्यासी सम्मिलित हुए । वरिष्ठ अभ्यासियों की वार्ताओं, सामूहिक चर्चाओं, आत्मनिरीक्षण और प्रश्नोत्तर सत्रों ने सहज मार्ग के विषय में और अधिक जानने का अवसर प्रदान किया । संगोष्ठी के अंत में प्रतिभागियों को अपने अनुभव डायरी में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया । एक व्यक्ति के जीवन में योग्य गुरु के महत्व को दर्शाती हुई एक लघु फिल्म भी दिखायी गई । प्रतिभागी इस तरह की और संगोष्ठियों तथा क्रैस्ट कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये उत्साहित थे ।

वडोदरा

२९ दिसम्बर २०१३ को वडोदरा में युवाओं के लिए एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया । लगभग ७५ युवा अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया । 'खजाने की खोज' नामक कार्यक्रम के साथ–साथ अभ्यासी बहिनों के लिए 'कार्यक्षेत्र में अपनी सुरक्षा' जैसे विषय पर भी सत्र आयोजित किया गया । कार्यक्रम के बाद सभी के लिये 'कैम्प फायर' का आयोजन किया गया था, जहाँ पर अभ्यासियों ने एक अभ्यासी के द्वारा प्रस्तुत संगीत का आनन्द लिया । कार्यक्रम का समापन ९ बजे की प्रार्थना के साथ हुआ ।

दिल्ली

माह जनवरी २०१४ में आर.के.पुरम आश्रम में लगातार दो सप्ताहांत, (१० से १२ जनवरी और १७ से १९ जनवरी) गाज़ियाबाद, नोयडा, गुड़गाँव और दिल्ली के सभी क्षेत्रों के अभ्यासियों के लिए एक आवासीय सप्ताहांत कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम का उद्देश्य पद्धति के प्रति उनकी समझ को गहरा करना और व्यक्तिगत साधना के लिए उनमें उत्साह जागृत कराना था । आत्मनिरीक्षण के क्रिया–कलाप, बातचीत के सत्र, और सामूहिक चर्चाओं ने साधना के विभिन्न पहलुओं के विषय में अभ्यासियों की समझ को गहनता प्रदान की । अभ्यासियों ने आश्रम में स्वयंसेवी क्रियाओं में भी भाग लिया । शाम के समय कुछ प्रतिभागियों ने भजन गाये और 'उपनिषद गंगा' नामक वृत्तचित्र का एक अंश भी दिखाया गया । प्रतिभागियों का अनुशासन और उत्साह तथा स्वयंसेवकों की कर्मठता दिल को छू लेने वाली थी ।

संयुक्त सचिव द्वारा उत्तर पूर्व के दौरे

भाई ए.पी.दुरई (संयुक्त सचिव) द्वारा १६ से २५ जनवरी २०१४ तक असम और अरुणाचल प्रदेश के केन्द्रों के दौरे किये गये। वह १६ जनवरी की सुबह गौहाटी पहुँचे और अगले कुछ दिनों में उन्होंने गौहाटी आश्रम, तेन्गा घाटी उप केन्द्र, बोमदिला, नहारलगुन, ज़ीरो, पासीघाट, उ. लखीमपुर और डिबरूगढ़ का दौरा किया। इन सभी केन्द्रों में अभ्यासियों के साथ बातचीत के उपयोगी सत्र तथा ओपन हाउस आयोजित किये गये।

इस यात्रा में भाई ईश्वर प्रसाद (जोन प्रभारी), भाई अरुण पाठक, भाई धनीचंद (जोन प्रभारी) और बहन ज्योत्स्ना उनके साथ रहे। इस यात्रा का उद्देश्य अभ्यासियों और प्रशिक्षकों को मालिक के करीब लाना था, जिस पर १९ तारीख को प्रशिक्षकों की बैठक में भी चर्चा हुई।

प्रशिक्षकों की दो बैठकों में उनके स्वयं के अभ्यास की समझ को और मालिक के साथ उनके संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। इस दल ने यह भी महसूस किया कि जहाँ कहीं भी वे गये मालिक उन पर नजर रख रहे थे और पग पग–पर उनका मार्गदर्शन कर रहे थे।

यू–कनेक्ट प्रोग्राम, जयपुर, राजस्थान

इस कार्यक्रम का उद्देश्य, यूनिवर्सिटी, कॉलेजों आदि में सहजमार्ग का परिचय करवा कर युवाओं में परिवर्तन लाना है। १९ जनवरी को आयोजित सत्र में "मलीबा" की यू कनेक्ट सफलता की कहानी स्वयंसेवकों के साथ साझा की गयी, जहाँ यह कार्यक्रम सर्वप्रथम आरम्भ किया गया था। इस कार्यक्रम के व्यवस्थित ढंग से क्रियान्वयन में सम्बद्ध प्रक्रियाओं की जानकारी उपलब्ध कराई गयी। एक अभ्यासी ने उनकी कंपनी में इसे प्रारंभ करने की इच्छा व्यक्त की। जुलाई में प्रारम्भ होने वाले नये शिक्षा सत्र में कॉलेज में संपर्क करने से पूर्व स्वयंसेवकों को इससे अच्छा अनुभव प्राप्त होगा।

क्षेत्रीय बैठक, कोलकता, पश्चिम बंगाल

२१ और २२ दिसंबर २०१३ को कोलकता में दो दिवसीय एक सम्मेलन आयोजित किया गया। बान्देल, रानीगंज, खड़गपुर, कृष्णनगर, आसनसोल, चित्तरंजन, बुरानपुर, कूच बिहार और दार्जिलिंग सहित पश्चिम बंगाल के विभिन्न भागों से आये लगभग साठ अभ्यासियों ने इस सम्मेलन में प्रतिभागिता की। कार्यक्रम का संचालन बंगाली में किया गया और इसमें साधना के विभिन्न पक्षों, विशेष रूप से दस उसूलों पर, जोर दिया गया। इस सम्मेलन ने अभ्यासियों की चिंताओं और उनकी समस्याओं के समाधान में मदद की। सभा ने बंगाली अनुवादकों की टीम को, उनके सामने पड़े विशाल कार्य हेतु, आपसी सहयोग प्रदान करने और योजना बनाने में मदद की। इन दो दिनों में पूरे समय प्रसन्नता और भाईचारे की भावना फ़ैली रही और सभी लोग ताज़गी और उत्साह के साथ वापस लौटे।

सहयोगी (फेसिलिटेटर) विकास कार्यक्रम

पनवेल आश्रम, मुंबई

१२ दिसंबर से १६ दिसम्बर २०१३ तक चले इस कार्यक्रम में पूरे महाराष्ट्र से पचास प्रतिभागी सम्मिलित हुए । प्रतिभागियों को दैनिक जीवन में एक उपकरण की तरह प्रयोग करने के लिये फेसिलिटेशन से परिचित कराया गया। 'फेसिलिटेशन' और 'भाईचारे' पर आयोजित इन कार्यशालाओं में प्रतिभागियों ने फेसिलिटेशन की इस कला को आत्मावलोकन, ध्यान से सुनने और दिल से बोलने के द्वारा सीखा। जी.आइ.टी.पी.मोड्यूलों पर हुई कार्यशालाओं ने उन्हें फेसिलिटेशन पर व्यवहारिक अनुभव प्रदान किया। मालिक द्वारा प्रदत्त इस अवसर को पूरे दिल से करने की केन्द्र प्रभारी की अपील के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

जीरो आश्रम, अरुणाचल प्रदेश

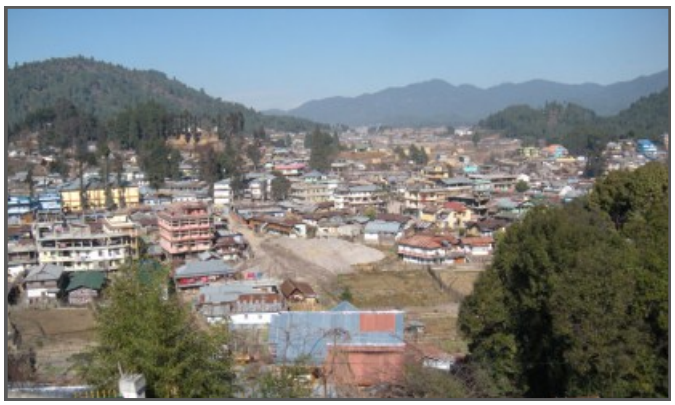

जीरो, जो अरुणाचल प्रदेश के निचले सुबंसिरी जिले का मुख्यालय है, ५००० फ़ीट की ऊँचाई पर स्थित है। यह एक फ़ैला हुआ पर्वतीय क्षेत्र है जो प्रकृति की भव्यता का विस्मयकारी प्रदर्शन करता है। ' जीरो', राज्य की राजधानी ईटानगर से लगभग १८० किलोमीटर दूर है तथा असम में उत्तरी लखीमपुर के पास स्थित निकटस्थ हवाई अड्डे लीलाबाड़ी से १७६ किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ का मौसम शीतकाल में चरम सीमा तक ठंडा तथा गर्मियों में सामान्य व सन्तुलित रहता है। 'जीरो' पठार की जनसंख्या २५००० है और यहाँ अधिकांशत: स्थानीय जनजाति, जिन्हें अपतानी कहते हैं, निवास करती है। यह जनजाति सूर्य और चन्द्र देवता की पूजा करती है जिन्हें दोन्यी–पोलो कहते हैं।

वर्ष १९८५ में भाई के.एन. तिवारी (उत्तराखण्ड से), जो अरुणाचल प्रदेश के उद्यान विभाग में कार्यरत हैं, स्थानांतरित होकर 'जीरो' पहुँचे। सितम्बर १९८६ में एक दिन अचानक शाम के समय किसी पर्वतीय भाग में टहलते हुए उन्होंने ध्यान में बैठे होने जैसा महसूस किया। उन्होंने तब प्रेम के प्रतीक रूप में वहाँ पर एक आश्रम की स्थापना का निर्णय लिया। वर्ष १९८७ में इस कार्य के लिये पूरी पर्वत चोटी की घेराबन्दी की गयी। बाद में इस भूमि पर पूजा के दूसरे स्थल भी विकसित हो गये। तब उन्होंने घर–घर जाकर लोगों में सहज मार्ग के दर्शन को प्रचारित करना प्रारम्भ किया। लोगों की रुचि को देखते हुए उन्होंने वर्ष १९९२ से प्रशिक्षक भाई पुरुषोत्तम अग्रवाल (उत्तरी लखीमपुर), भाई ईश्वर प्रसाद अग्रवाल (तिनसुकिया) तथा भाई के.बी. चक्रवर्ती (ईटानगर) से समय–समय पर 'जीरो' में अभ्यासियों को सेवा देने का अनुरोध किया।

जब भाई तिवारी के निवास पर अभ्यासियों की संख्या में वृद्धि होती गयी तो उन लोगों ने वहाँ पर एक आश्रम होने की आवश्यकता महसूस की। पूर्व प्रस्तावित भूभाग

प्रकाश का केन्द्र

औपचारिक रूप से श्री रामचन्द्र मिशन को १२ सितम्बर १९९३ में आवंटित किया गया। गुरुदेव ने भाई ईश्वर प्रसाद को इस कार्य के लिये नियुक्त किया जिन्होंने ४ जुलाई १९९४ को आश्रम निर्माण के लिये स्वीकृति प्रदान की। यद्यपि सुदूर और पर्वतीय भूभाग होने के कारण यह परियोजना अति दुरूह थी, लेकिन अभ्यासियों के विशुद्ध प्रेम एवं इच्छा शक्ति ने आश्रम का निर्माण सम्भव कर दिखाया।

१४ सितम्बर १९९६ के दिन भाई एस.ए.सरनाड (श्री रामचन्द्र मिशन के तब के सचिव) द्वारा आश्रम का उद्घाटन किया गया। निकट के केन्द्रों से लगभग सत्तर अभ्यासी इस उद्घाटन समारोह में सम्मिलित हुए। जुलाई २००३ में भाई यू.एस. बाजपेयी (सचिव, श्री रामचन्द्र मिशन) ने आश्रम का भ्रमण किया। क्योंकि आश्रम भूमि औपचारिक रूप से मन्दिर समिति द्वारा मिशन को आवंटित की गयी थी, अत: वर्ष २००० में शासन द्वारा भी इस भूमि का आवंटन करने के लिये अरुणाचल प्रदेश सरकार को एक आवेदन प्रस्तुत किया गया। अन्तत: शासन द्वारा १८९० वर्ग मीटर का क्षेत्र हमारे मिशन को आवंटित कर दिया गया।

आश्रम में एक दो मंजिला भवन है, जिसमें १२२ वर्ग मीटर क्षेत्र का भूतल है जो डोर्मिटरी की भांति प्रयोग किया जाता है। १२८.३८ वर्ग मीटर क्षेत्र की दूसरी मंजिल में संलग्न रसोईघर, स्नानागार व शौचालय सहित गुरुदेव का कक्ष, एक शयन कक्ष, अतिथि कक्ष तथा भोजन–सह–बैठक कक्ष है।

ध्यान कक्ष अर्द्ध–स्थायी प्रकार का है जिसकी छत सी.जी.आइ. चादर की बनी है और कुल क्षेत्र ११९ वर्गमीटर है। चारों ओर की दीवारें चीरे हुए बाँस की पट्टी से बनी हैं जिन्हें आपस में बुन कर बड़ी चादर का स्वरूप दिया गया है। वर्तमान में यहाँ अभ्यासियों की संख्या अस्सी से अधिक है तथा रविवारीय सत्संग में उपस्थिति बीस से पच्चीस तक रहती है। 'जीरो' आश्रम हमारे मिशन को अरुणाचल प्रदेश के सुदूर क्षेत्रों में फ़ैलाने का उद्देश्य पूरा करता है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2013 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.